विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - I, July–Dec 2024
E-ISSN (Online) – XXXX-XXXX

राजस्थान की सहरिया जनजाति के सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिका

डॉ. रोहिताश कुमार
सहायक आचार्य (अतिथि)
दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज़्म, दिल्ली विश्वविद्यालय
ई-मेल – profrohitashkumar@gmail.com

शोध सारांश

आज के इस डिजिटल युग में लगभग सभी समुदायों की पहुँच सोशल मीडिया तक हो गई है। लोग सोशल मीडिया पर इतने निर्भर हो गए है, मानो सोशल मीडिया के बिना लोगों का जीवन रुक सा जाता हो। सोशल मीडिया के कई रूप है, जो समुदाय को एकीकृत करने का काम करते हैं। सोशल मीडिया विभिन्न रूपों और प्लेटफ़ॉर्मों पर उपलब्ध है, जो लोगों को अपने विचार, जीवनसाथी, व्यापार, यात्रा, संगीत, फिल्में, समाचार, और व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं को साझा करने की अनुमति देता है। इसके प्रमुख रूपों में सामाजिक नेटवर्क प्रमुख है, जो लोगों को अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों, और अन्य लोगों से जुड़ने की अनुमति देता है। इसमें फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, लिंक्डइन जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स शामिल हैं। दूसरा रूप में मीडिया साझा है, जिसके माध्यम से लोग एक दूसरे के साथ वीडियो, फोटो, और ऑडियो सामग्री साझा कर सकते हैं। इसमें यूट्यूब, टिकटॉक, व्हाट्सएप, टेलीग्राम, और स्नैपचैट जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स शामिल हैं। ब्लॉगिंग प्लेटफ़ॉर्म्स जैसे कि टम्ब्लर, मीडियम, वर्डप्रेस लोगों को लेख, विचार और अनुभव साझा करने की सुविधा प्रदान करते हैं। इन प्रमुख रूपों में, सामाजिक नेटवर्किंग साइटें सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली हैं, जहां लोग अपने विचारों और जीवन के विभिन्न पहलुओं को साझा करते हैं। समुदायों में जागरूकता लाने में सोशल मीडिया की भूमिका प्रमुख मानी जाती है। विभिन्न शोध कार्यों से पता चलता है कि सोशल मीडिया ने अधिकतर समुदायों के स्त्री, पुरुष, बच्चों, युवाओं और वृद्धों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। वर्तमान समय में सहरिया जनजाति भी परिवर्तन की ओर अग्रसर है। सहरिया जनजाति में परिवर्तन के विभिन्न कारकों में से एक कारक सोशल मीडिया को भी

माना जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र राजस्थान की सहरिया जनजाति के सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिका पर केंद्रित है।

मुख्य शब्द - सोशल मीडिया, सहरिया जनजाति, पीवीटीजी, जनजातीय क्षेत्र।

परिचय

सोशल मीडिया वर्तमान समय में समाज में सबसे लोकप्रिय संचार माध्यम बन गया है। इसके परिणामस्वरूप पूरे दुनिया के सामाजिक स्तर, सांस्कृतिक, व्यवहार और विचारधारा पर अलग ढंग का बदलाव दिख रहा है। सोशल मीडिया से संबंधित सामाजिक वेबसाइटें लम्बे समय से दोस्तों और नाते-रिश्तेदारों से पुनः संबंध स्थापित कराने के साथ ही रोज नए दोस्त बनाने, रोजाना नए संबंधों को खोजने और रोजाना नए संबंधों को साझा करने में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। विद्यालयों, कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र अपनी शैक्षिक दक्षता और संगठन कौशल में सुधार करने के लिए सोशल मीडिया के द्वारा अपने सहपाठियों और शिक्षकों से सहयोग ले रहे हैं। आज ज्यादातर बेरोजगार युवा अपनी रोजगार और व्यापार की खोज में सोशल वेबसाइटों का प्रयोग कर रहे हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्राकृतिक आपदाओं के समय में आपदा प्रबंधन के लोग और स्वयंसेवी संगठनों के लोग सोशल मीडिया का उपयोग कर ज्यादा से ज्यादा स्वयंसेवकों को अपने राहत अभियान में जोड़ते हैं और सोशल मीडिया के माध्यम से प्राकृतिक आपदाओं से घिरे विभिन्न क्षेत्रों में जरूरत के हिस्साब से राहत आसानी से पहुँचाते है। सोशल मीडिया के उपयोग से लोगों के बीच संवाद का स्वरूप बदल गया है। इस माध्यम का उपयोग करके आम लोग भी अपने संबंधों को सांझा कर रहे हैं, स्थानीय समाचारों का आदान-प्रदान कर रहे हैं। आज की डिजिटल जिंदगी में, सोशल मीडिया सरकार, गैर-सरकारी संगठनों, व्यवसायिक संगठनों, और विशेष व्यक्तियों को एक बड़ी संख्या में लोगों के साथ संपर्क बनाने का एक बहुत बड़ा अवसर प्रदान करता है। स्कूलों की छुट्टियों, सामूहिक कार्यक्रमों की व्यवस्था, सरकारी नीतियों की जानकारी आदि सोशल माध्यमों के जरिए लोगों तक आसानी से पहुंच रही हैं। ट्विटर, ब्लॉग्स, और व्हाट्सएप के माध्यम से अपने विचारों को

साझा करना सोशल मीडिया का एक बड़ा उपाय है। विकिपीडिया के अनुसार, "सोशल मीडिया मानव के बीना सीमा की सूचनाओं को साझा करने और रचनात्मक जानकारी को एक स्थान पर जमा करने का मुख्य रूप से इंटरनेट पर आधारित उपकरण है।" इसी प्रकार, सोशल मीडिया को प्रचारित करते हुए एक्सल कहते हैं, "सोशल मीडिया व्यापारियों की सूचना और व्यापार की आवश्यकताओं को तेज करने और उन्हें मदद करने के लिए उपलब्ध उपकरण और ऑनलाइन माध्यम हैं।"

सोशल मीडिया – बीसवीं सदी में प्रौद्योगिकी का तेजी से विकास हुआ है और इसका सबसे बड़ा प्रमुख उदाहरण सोशल मीडिया है। सोशल मीडिया ने समाज में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है, जिसका असर हमें गहरे रूप में महसूस हो रहा है। 1999 में पहली सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट की शुरुआत हुई, जिससे लोगों के बीच विचारों और जानकारी का आदान-प्रदान सम्भव हुआ। फिर 2000 के दशक में माइस्पेस, लिंक्डइन की तरह कई ओर सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स उत्पन्न हुए, जो लोगों को एक-दूसरे के साथ जुड़ने की सुविधा प्रदान करते थे। 2005 में, वेबसाइट्स जैसे कि ब्लॉगर और यूट्यूब ने व्यक्तियों को विचारों को प्रसारित करने और साझा करने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम प्रदान किया। और फिर 2006 तक फेसबुक, ट्विटर और रेडडिट जैसे बहुत सारे सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स लोगों को आपसी संवाद करने और जानकारी साझा करने की सुविधा प्रदान करने लगे। वर्तमान समय में, इन सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स ने व्यक्तियों के प्रयोग के प्रभाव को बड़े पैमाने पर बदल दिया है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, लिंक्डइन और व्हाट्सएप जैसी साइटों का उपयोग लोगों के बीच समाजिक संवाद को बढ़ावा देने के साथ-साथ, समाज के मुद्दों पर चर्चा करने और समाधान निकालने की सुविधा भी प्रदान करता है। इनके माध्यम से, लोग समाज में अपने धार्मिक, सामाजिक, और राजनीतिक मामलों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और उन पर अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। इस प्रकार, सोशल मीडिया ने एक नया संचार का दौर शुरू किया है और लोगों को समृद्धि और सामाजिक सुरक्षा की दिशा में एक साथ ले जाने में मदद की है।

शोध उद्देश्य:

- सहरिया जनजाति में जन संचार के माध्यमों की उपस्थिति का पता लगाना।
- सहरिया जनजाति के लोगों पर सोशल मीडिया के प्रभावों को जानना।
- सोशल मीडिया पर खर्च करने के समय को मापने के लिए।
- सहरिया जनजाति के लोगों को सूचित करने और शिक्षित करने के लिए सही दिशा में सोशल मीडिया के उचित उपयोग के लिए कुछ उपाय करने की सिफारिश करना।

अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र "राजस्थान की सहरिया जनजाति के सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिका" पर केंद्रित है। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य सहरिया जनजाति में जनसंचार के माध्यमों की उपस्थिति का पता लगाना। सहरिया जनजाति के लोगों पर सोशल मीडिया के प्रभावों को जानना। सोशल मीडिया पर खर्च करने के समय को जानना। सहरिया जनजाति के लोगों को सूचित करने और शिक्षित करने के लिए सही दिशा में सोशल मीडिया के उचित उपयोग के लिए कुछ उपाय करने की सिफारिश करना है। अध्ययन का क्षेत्र राजस्थान के हाड़ौती अंचल का बारां जिला है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधार्थी ने 18 से 60 आयु वर्ग के 120 सहरिया लोगों (पुरुष एवं महिलाएँ) का उद्देश्यपूर्ण निर्देशन की सहायता से चयन किया है। प्राथमिक तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण वर्णनात्मक के साथ-साथ अन्य अनुसंधानों के निष्कर्षों एवं सिद्धांतों के संदर्भ में किया है।

सहरिया जनजाति – सहरिया जनजाति का स्वरूप, ढांचा, संगठन और इसकी सामाजिक व्यवस्था अन्य समाज के प्रतिकूल है। इसके आर्थिक,सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक ढांचे एवं व्यवस्था की अपनी विशेषताएं हैं। जो इसे अन्य समाजों से पृथक करती है। सहरिया जनजाति का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है। ये चाहे उनके जीविका अर्जन के साधन के रूप में है अथवा परम्परा, रीति-रिवाज, संस्कार, अंधविश्वास, रूढ़ियों आदि के रूप में। आदिम जनजाति से हमारा तात्पर्य ऐसे समाज से है जिनमें ये विशेषताएं विद्यमान होती है। मजदूरी और कृषि पर निर्भरता, कम जनसंख्या, व्यक्तिगत संपर्क की कमी, अन्य समाज से

भिन्नता। सहरिया जनजाति भी विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (पीवीटीजी) की श्रेणी में आती है। सहरिया जनजाति के लोग मुख्य रूप से भारत के राजस्थान, मध्यप्रदेश एवम् छत्तीसगढ़ में निवास करते है। सहरिया राजस्थान की एक मात्र आदिम जनजाति है, जो विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (पीवीटीजी) में आती है। राजस्थान में कुल 12 जनजातियां हैं। जिनमें से मीणा, भील, गरासिया, सहरिया, डामोर, धानका, पटेलिया, कोनका आदि प्रमुख है। राजस्थान के हाड़ौती अंचल के बारां जिले की चार तहसीलों मांगरोल, अटरू, शाहबाद एवं किशनगंज तहसीलों के गांवों तथा जंगलों में सहरिया जनजाति का बाहुल्य है। इसके अतिरिक्त चित्तौड़गढ़, झालावाड़, सिरोही, अजमेर, कोटा, बूंदी, झुन्झुनू, धौलपुर, हनुमानगढ़ व गंगानगर जिले में भी ये लोग निवास करते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में कुल सहरिया जनजाति 1,11,377 हैं जो राज्य की कुल जनजाति जनसंख्या का लगभग 1.20 प्रतिशत हैं। जिनमें 56,653 पुरूष और 54,724 महिलाएं है। 96.41 प्रतिशत सहरिया जनसंख्या गांवों में निवास करती है, केवल 3.59 प्रतिशत जनसंख्या ही शहरों में निवास करती है। राजस्थान की सभी जनजातियों में से सहरिया जनजाति अन्य जनजातियों से कई मापदंडो में सर्वाधिक पिछड़ी तथा निर्धन है। सहरिया जनजाति का 97.43 प्रतिशत भाग केवल बारां जिले के पहाड़ों व जंगलों में निवास करता है। हट्टन ने इन्हें आदिमजाति (प्रीमिटिव ट्राइब्स) नाम से सम्बोधित किया है। जी.एस. घुरिये ने इन जनजाति या आदिवासी समूह को "पिछड़े हिन्दू" कहा है। श्यामाचरण दुबे के अनुसार- "वास्तव में जनजाति" व्यक्तियों का एक वह समूह है, जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में आवास या विचरण करता है। और जो किसी आदि पूर्वज को ही अपना उद्गम मानता हो तथा जिसकी एक सामान्य संस्कृति होती है, और जो आज भी आधुनिक सभ्यता के प्रभावों से परे है।" गिलिन एवं गिलिन के अनुसार "स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी समूह को जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता हो, एक जनजाति कहते हैं।" डॉ. मजूमदार के अनुसार "एक जनजाति अनेक परिवारों के समूह का एक संकलन होता है, जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिनके सदस्य एक निश्चित भू-भाग पर रहते हैं, सामान्य भाषा बोलते हैं, और विवाह या उद्योग के विषय में कुछ निषेधों का पालन करते हैं, और एक निश्चित एवं उपयोगी आदान प्रदान का परस्पर विकास करते हैं।"

इन परिभाषाओं के अनुसार स्पष्ट है कि "जनजाति समाज एक ऐसा सामाजिक समूह है, जो एक निश्चित क्षेत्र में निवास करता है, समान्य भाषा बोलता है, वो अपनी विशिष्ट संस्कृति का पालन करता है और अपना एक सामाजिक संगठन रखता है।" सहरिया जनजाति के लोग हमेशा अपने साथ कुल्हाड़ी रखते हैं। सहरिया शब्द फारसी के 'सेहर' शब्द से उत्पन्न माना जाता है, जिसका अभिप्राय जंगल में निवास करने से है। डॉ. नायक ने सहरियाओं के निवास के बारे में लिखा है कि - "सहरिया गाँव सामान्यतः समतल भूमि पर बसे होते हैं। गांव जंगल पहाड़ियों और घाटियों से घिरा होता है। कुछ सहरिया गाँव पहाड़ियों पर भी बसे होते हैं। साधारणतः घर आमने सामने पंक्तिबद्व चैकोर शैली में बसे होते हैं, जिसे सहराना के नाम से जाना जाता है।" सहरिया लोग मुख्यतः गांव से बाहर निश्चित स्थान पर बनायी गई सामूहिक बस्ती में निवास करते हैं। इनकी बस्ती को 'सहराना' कहा जाता है, जिसमें इनके घर झोपड़ों के रूप में एक साथ बसे दिखलायी देते हैं। सहराना में अन्य जाति के लोग निवास नहीं करते हैं। घर की दीवारें मिट्टी एवं पत्थर से निर्मित होती हैं और छतें पत्थर के पतले कातलों, आम के पत्तों अथवा तेन्दू पत्तों से ढकी मिलती हैं। घर की दीवारों एवं आंगन पर मिट्टी से लिपाई की जाती है। घर के बाहर ये लोग बड़े ही आकर्षक एवं मनमोहक 'माँडणे' (भित्ति चित्र) बनाते हैं। सहराना के बीच एक छतरीनुमा गोल बड़ी झोंपड़ी बनाते हैं, जिसे 'बंगला' कहा जाता है। 'बंगला' सहराने की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र होता है। जाति पंचायत की बैठक यही होती है। सहराने में आये किसी भी व्यक्ति के मेहमान को इस बंगले में ही ठहराया जाता है। डॉ. टी.बी. नायक के अनुसार - "प्राकृतिक रूप से उगने वाले कंद, मूल, फल, हरी पत्तियां खाने का सहरियाओं का सबसे प्रिय शौक है। वनस्पतियों का विस्तृत ज्ञान प्रत्येक सहरिया को पुरखों से विरासत में मिला है।" ज्वार, बाजरा, मक्के की रोटी सहरिया लोगों का मुख्य भोजन है। गेहूं का उपयोग भी आम हो गया है। सहरिया जंगलों से शिकार भी करते हैं। शराब, तम्बाकू सेवन तथा बीड़ी पीना भी अधिक प्रचलित है। सहरिया जनजाति में माता-पिता द्वारा निश्चित विधिवत विवाह अधिक प्रचलित हैं। विवाह की रस्म सहराना के पंच-पटेलों द्वारा पूरी की जाती है। सहरिया जनजाति में 'दापा प्रथा' या वधू मूल्य, विधवा विवाह तथा नाता प्रथा, भी प्रचलित है। नाता प्रथा में विवाहित स्त्री के नाते जाने पर पूर्व पति को झगड़ा राशि चुकानी पड़ती है। सहरिया जनजाति में जाति, पंचायत का

काफी प्रभाव है जो आपसी विवाद निपटाती है। पंचायत किसी अपराध के लिए हर्जाना, प्रायश्चित एवं जाति-बहिष्कार का निर्णय करती है। पंचायत के मुखिया 'पटेल' का पद वंशानुगत होता है। 'पटेल' का पूरा समुदाय आदर करता है। जाति पंचायत के तीन स्तर हैं- पंचताई पंचायत (सहराना स्तर), एकाएशिया पंचायत (11-12 गांवों की पंचायत), चैरासिया पंचायत (84 गांवों की पंचायत)। समुदाय का बड़ा निर्णय अंतिम स्तर की पंचायत से होता है। सन् 1996 के पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक प्रसार) अधिनियम के पश्चात् निर्वाचित पंचायतें भी गठित होने लगी। सहरियाओ में पिता ही परिवार का मुखिया होता है। सहरिया जनजाति में एकल परिवार ज्यादा देखने को मिलते है। एकल परिवार में स्वयं मुखिया, उसकी पत्नी और अविवाहित बच्चे होते है। कुछ सहरिया संयुक्त परिवार भी देखने को मिलते है। सहरियाओ में बच्चों की शादी करने के बाद उन्हें अलग कर दिया जाता है। घर का सारा काम महिलाएं करती हैं। राजस्थान के सहरिया लोगों की कोई अपनी भाषा या बोली नहीं है। सहरिया जहां निवास करते हैं, वहीं की बोली बोलते हैं। सहरिया जनजाति के पुरूष केवल घुटनों तक धोती(पंचा) और कमीज(सलूका) पहनते है तथा कुछ पुरूष साफा(खपटा) पहनते है। तथा सहरिया युवा जींस पेंट ऑर शर्ट के साथ जूता पहनते है। सहरिया महिलाएं घाघरा, लुगड़ा तथा कब्जा(सलूका) पहनती है। विवाहित महिलाएं एक विशेष वस्त्र रेज़ा पहनती है। सहरिया महिलाएं अपने शरीर में गोदना गुदवाती हैं, जो विभिन्न आकार- प्रकार के होते हैं। वन, कृषि तथा श्रम सहरिया लोगों के मुख्य आर्थिक संसाधन हैं। लघुवन उपज संग्रहण तथा पास के खेतों में मजदूरी इनके प्रमुख जीविकोपार्जन के आधार हैं। अज्ञानता, निरक्षरता, नशे की प्रवृत्ति एवं आर्थिक पिछड़ापन इत्यादि के कारण सहरिया जनजाति शोषित समुदाय बनकर रह गया है।

सहरिया जनजाति और सोशल मीडिया

सहरिया जनजाति के उत्तरदाताओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति:

विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - I, July–Dec 2024
E-ISSN (Online) – XXXX-XXXX

सारणी संख्या 1

	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रति शत
शैक्षिक स्तर		
अनपढ़	20	16.67%
प्राथमिकी	10	8.33%
माध्यमिक	40	33.33%
हाई स्कूल	30	25%
स्नातक	20	16.67%
लिंग		
पुरुष	80	66.67%
महिला	40	33.33%
कुल वार्षिक आय		
20000 से कम	25	20.83%
20 हजार से 40000 तक	80	66.67%
40000 हजार से अधिक	15	12.5%
आयु-समूह		
18-30	60	50%
31-40	30	25%
41-50	20	16.67%
>60	10	8.33%
व्यावसायिक विवरण		
मजदूर	80	66.67%
कृषक	10	8.33%
अन्य	30	25%

स्रोत : अध्ययन क्षेत्र (जुलाई 2023 से जनवरी 2024)

सारणी संख्या 1 में कुल 120 उत्तरदाताओं के शैक्षिक स्तर, लिंग, कुल वार्षिक आय, आयु-समूह, और व्यावसायिक का विवरण दिया गया है। शैक्षिक स्तर के आधार पर 120 उत्तरदाताओं में से 20

उत्तरदाता अनपढ़ है, जो कुल का 16.67% हैं। 10 उत्तरदाता प्राथमिकी है, जो कुल का 8.33% हैं। 40 उत्तरदाता माध्यमिक है, जो कुल का 33.33% हैं। 30 उत्तरदाता हाई स्कूल है, जो कुल का 25% हैं। 20 उत्तरदाता स्नातक है, जो कुल का 16.67% हैं। लिंग के आधार पर कुल 120 उत्तरदाताओं में से 80 उत्तरदाता पुरुष है, जो कुल का 66.67% है। 40 उत्तरदाता महिलाएं है, जो कुल का 33.33% है। उत्तरदाताओं की कुल वार्षिक आय के आधार पर 25 उत्तरदाता 20000 से कम आय वाले है, जो कुल का 20.83% हैं। 80 उत्तरदाता 20000 से 40000 तक की आय वाले है, जो कुल का 66.67% हैं। 15 उत्तरदाता 40000 से अधिक आय वाले है, जो कुल का 12.5% हैं। आयु समूह के आधार पर 60 उत्तरदाता 18 से 30 आयु वर्ग के है, जो कुल का 50% है। 30 उत्तरदाता 31 से 40 आयु वर्ग के है, जो कुल का 25% है। 20 उत्तरदाता 41 से 50 आयु वर्ग के है, जो कुल का 16.67% है। 10 उत्तरदाता 60 या 60 से अधिक आयु वर्ग के है, जो कुल का 8.33% है। व्यवसाय के आधार पर 80 उत्तरदाता मजदूरी करते है, जो कुल का 66.67% है। 10 उत्तरदाता खेती का कार्य करते है, जो कुल का 8.33% है। 30 उत्तरदाता अन्य कार्य करते है, जो कुल का 25% है।

निष्कर्ष: इस सारणी में शैक्षिक स्तर की विभिन्न ग्रेडों की संख्या दर्शाई गई है। अनपढ़ और प्राथमिकी के प्रतिशत सामान्य रूप से कम हैं, जबकि माध्यमिक और हाई स्कूल की संख्या अधिक है। यह दिखाता है कि अधिकांश उत्तरदाताएं माध्यमिक और हाई स्कूल स्तर पर हैं। पुरुषों की संख्या महिलाओं की संख्या से अधिक है, लेकिन अंतर अधिक नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं की महिलाओं और पुरुषों की उपस्थिति में संतुलन है। ज्यादातर उत्तरदाताओं की आय 20000 से 40000 तक है। इससे यह पता चलता है कि इस क्षेत्र में मध्यम आय वाले लोगों की संख्या अधिक है। 18-30 आयु समूह में सबसे अधिक उत्तरदाताएं हैं, जो संभावना है कि इस क्षेत्र में युवा जनसंख्या का अधिकांश है। मजदूरों की संख्या सबसे अधिक है, जो इस क्षेत्र में काम करने वाले लोगों का बड़ा हिस्सा है। इस विश्लेषण से, यह प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र में माध्यम आय और शैक्षिक स्तर के लोग ज्यादा हैं, और अधिकांश उत्तरदाता मजदूरों के रूप में काम करते हैं।

सहरिया जनजाति में जनसंचार के माध्यमों की उपस्थिति:

विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - I, July–Dec 2024
E-ISSN (Online) – XXXX-XXXX

आरेख 1

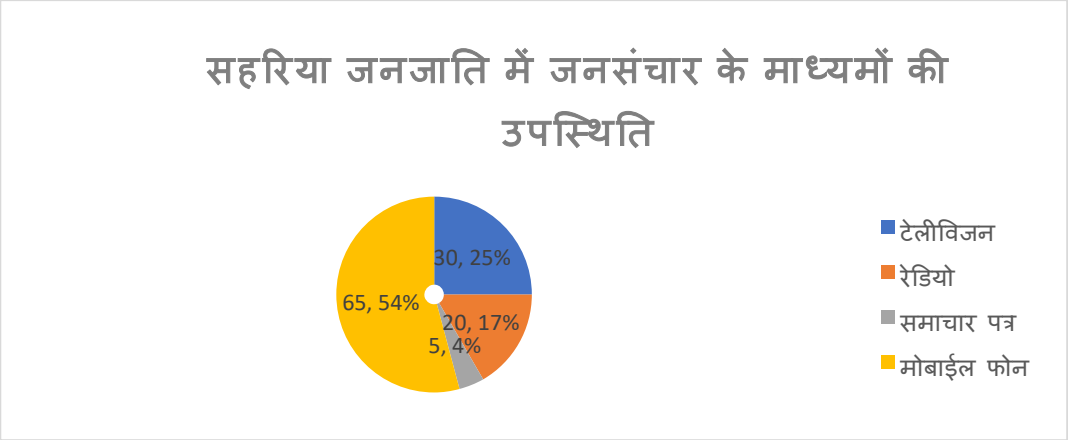

स्रोत: अध्ययन क्षेत्र (जुलाई 2023 से जनवरी 2024)

उपरोक्त आरेख के अनुसार कुल 120 उत्तरदाताओं में से 65 के यहाँ जनसंचार माध्यम के रूप में मोबाइल फोन उपलब्ध है, जो कुल का 54% है। यह संख्या में सबसे अधिक है। 30 उत्तरदाताओं के यहाँ टेलीविजन है,जो कुल का 25% है। 05 उत्तरदाताओं के घर पर समाचार पत्र उपलब्ध है, जो कुल का 4% है। जो संख्या में सबसे कम है। 20 उत्तरदाताओं के यहाँ रेडियों उपलब्ध है, जो कुल का 17%है।

निष्कर्ष: इस आरेख में दिये गए आकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि 84 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घरों में जनसंचार माध्यमों के रूप में टेलीविजन और मोबाइल फोन उपलब्ध है। समाचार पत्र केवल 4 प्रतिशत घरों तक ही पहुँच रहा है। जो सबसे कम है। यह प्रिंट मीडिया के लिए एक चिंता का विषय हो सकता है।

सहरिया जनजाति के लोगों द्वारा प्रतिदिन सोशल मीडिया पर खर्च किया जाने वाला समय:

विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - I, July–Dec 2024
E-ISSN (Online) – XXXX-XXXX

आरेख 2

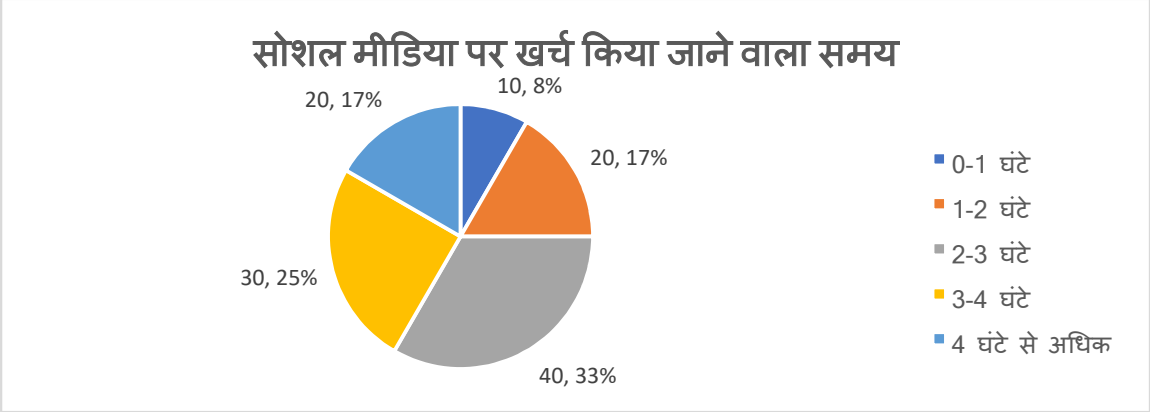

स्रोत: अध्ययन क्षेत्र (जुलाई 2023 से जनवरी 2024)

उपरोक्त आरेख से यह स्पष्ट होता है कि 33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा 2 से 3 घंटे, 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा 3 से 4 घंटे, 08 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा 1 घंटे से कम, 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा 1 से 2 घंटे और 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा 4 घंटे से अधिक समय सोशल मीडिया के विभिन्न रूपों को देखने में जाता है।

सहरिया जनजाति के लोगों पर सोशल मीडिया का प्रभाव:

आरेख 3

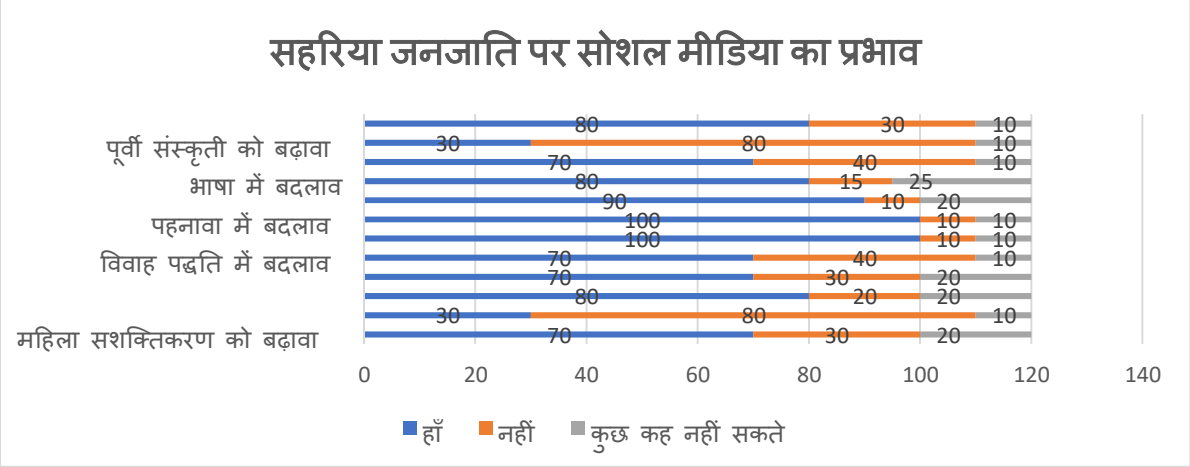

स्रोत: अध्ययन क्षेत्र (जुलाई 2023 से जनवरी 2024)

विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - I, July–Dec 2024
E-ISSN (Online) – XXXX-XXXX

उपरोक्त आरेख से यह स्पष्ट होता है कि 120 उत्तरदाताओं में से लगभग 80% उत्तरदाताओं के अनुसार सोशल मीडिया से भाषा, जीवनशैली, पहनावा, विवाह पद्धति, और पारिवारिक मूल्य परम्पराओं में बड़े बदलाव देखने को मिले है। इसके साथ-साथ पूर्वी एवं पश्चिमी संस्कृती को बढ़ावा मिला है। 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। उनके अनुसार सोशल मीडिया के कारण यद्यपि लड़का-लड़कियों का भेदभाव भी कम हुआ है। अब लड़कियों को भी पहले की अपेक्षा अधिक सुविधा दी जाने लगी है। इन्होंने बताया कि पहले लड़कियों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि से सम्बन्धित सुविधाएं नहीं थी परन्तु अब लड़कियों को शिक्षा भी दी जाने लगी है। सोशल मीडिया में प्रसारित विभिन्न सूचनाओं, ग्राफिस, विडियो में लड़कियों की पैरवी की जाती है। उनके अधिकारों की बात की जाती है। जिससे अब धीरे-धीरे जेण्डर असमानता कम हुई है यद्यपि लड़के और लड़कियों में भेदभाव आज भी किया जाता है, परन्तु इसमें कमी आयी है।

सहरिया जनजाति में सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव:

आरेख 4

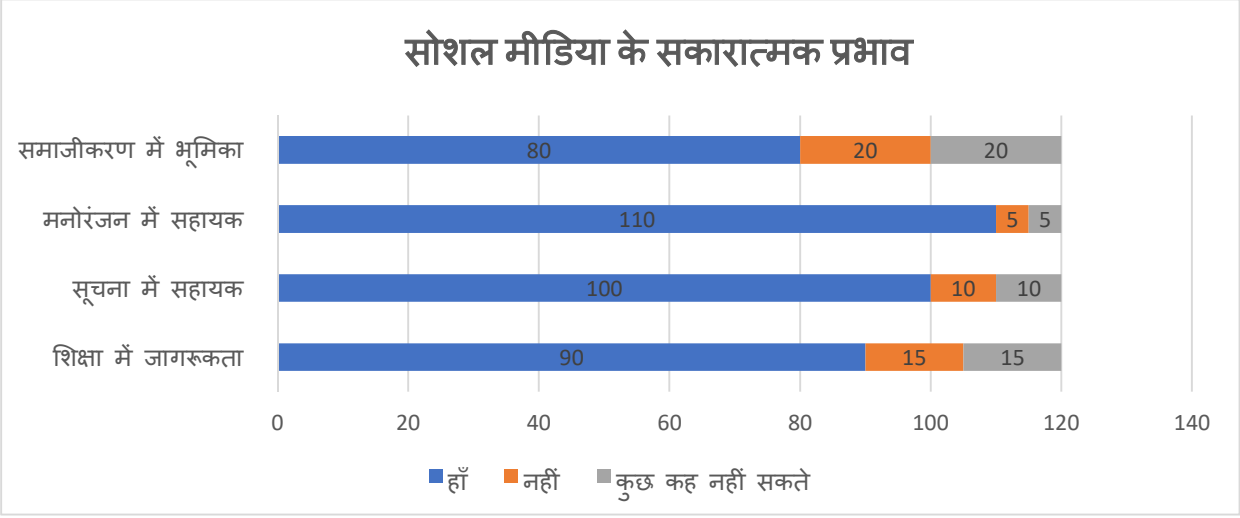

स्रोत: अध्ययन क्षेत्र (जुलाई 2023 से जनवरी 2024)

विमर्श प्रवाह
Vimarsh Pravah
An Open Access, Bi-Annual, Blind Peer Reviewed, E-Research Journal
Vol. - I, Issue - I, July–Dec 2024
E-ISSN (Online) – XXXX-XXXX

उपरोक्त आरेख से यह स्पष्ट होता है कि 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सोशल मीडिया समाजीकरण की भूमिका निभाता है। इनके अनुसार सोशल मीडिया से हमें कई चीजों के बारे में हमें सीखने को मिलता है। जैसे- खान-पान के नये तरीके, पहनावे के नये तरीके, केश सज्जा के नये-नये तरीके सीखने को मिलता है। साथ ही विभिन्न भूमिकाओं के बारे में भी सीखने को मिलता है। इसी प्रकार 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सोशल मीडिया सूचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधिकांश इससे सहमत है कि सोशल मीडिया सूचना का काम करता है। इसके अनुसार सोशल मीडिया देश-विदेश की जानकारी, मौसम की जानकारी, राजनीतिक जानकारी आदि प्राप्त होती है। 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सोशल मीडिया मनोरंजन की भूमिका निभाता है उनके अनुसार सोशल मीडिया को देखकर हम हमारे तनाव व समस्याओं को भूल जाते हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया मनोरंजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यद्यपि सोशल मीडिया अन्य क्षेत्रों में भी भूमिका निभाता है। परन्तु सहरिया जनजाति के लोगों के अनुसार सोशल मीडिया मनोरंजन की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सोशल मीडिया से शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

निष्कर्ष: सोशल मीडिया आधुनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। इसका उपयोग समाजीकरण, सूचना, मनोरंजन, और शिक्षा में किया जाता है।

सहरिया जनजाति में सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव:

आरेख 5

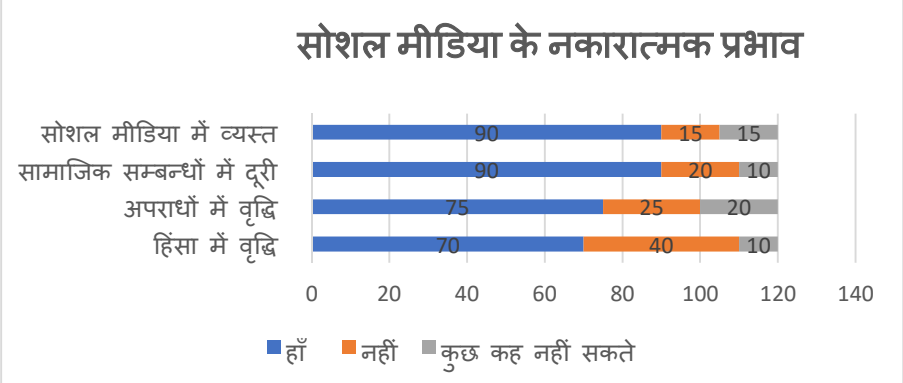

स्रोत: अध्ययन क्षेत्र (जुलाई 2023 से जनवरी 2024)

उपरोक्त आरेख से यह स्पष्ट होता है कि 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों में हिंसा, अपराधों में वृद्धि एवं सामाजिक सम्बन्धों में दूरी होना बताया है। उनके अनुसार सोशल मीडिया के आने के पहले गांव में इतनी हिंसा और अपराध नहीं थे सोशल मीडिया में हिंसा अपराध को जिस रूप में बताया जाता है। जिससे हिंसा और अपराध के तरीकों को सीखते हैं। साथ ही बताया कि सोशल मीडिया के आने से पहले गांवों में प्रगाढ़ सम्बन्ध थे सब एक दूसरे के यहां जाते थे। वार्तालाप करते थे, अब धीरे-धीरे सोशल मीडिया के कारण सब मोबाइल फोनों में व्यस्त रहते हैं। जिससे लोगों के बीच वार्तालाप कम हुई है। सामाजिक सम्बन्धों में दूरी आ गई है। इसके साथ ही 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सोशल मीडिया के आने से पहले लोगों के बीच में आपस में वार्तालाप हुआ करता था। घर की छोटी से छोटी बातों को लेकर, देश दुनिया के ऊपर चर्चाएं हुआ करती थी। परन्तु सोशल मीडिया ने इस प्रकार के सामाजिक मेल मिलाप और चर्चाओं को खत्म कर दिया है।

निष्कर्ष:

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार है।

- अधिकांश सहरिया घरों में जनसंचार माध्यमों के रूप में टेलीविजन और मोबाइल फोन उपलब्धता है। समाचार पत्र अभी भी सहरिया घरों तक पहुँच नहीं बना पा रहे है।
- 40-50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा 2 से 4 घंटे या 4 घंटे से अधिक का समय सोशल मीडिया के विभिन्न रूपों को देखने में खर्च करते है।
- सोशल मीडिया के आने से सहरिया समाज में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शिक्षा से संबन्धित जागरूकता में पहले की तुलना में बढ़ोतरी हुई है।
- सोशल मीडिया ने सहरिया समाज में व्याप्त अंधविश्वास में कुछ हद तक कम किया है, यद्यपि यह पूरी तरह से समाप्त तो नहीं हुआ लेकिन इसमें कमी आयी है।
- सोशल मीडिया के माध्यम से सहरिया लोगों में शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में पहले की तुलना में बढ़ोतरी हुई है।

- सहरिया लोगों में सोशल मीडिया ने उनकी भाषा, जीवनशैली, पहनावा, विवाह पद्धति, और पारिवारिक मूल्य परम्पराओं में बड़े बदलाव देखने को मिले है। इसके साथ-साथ पूर्वी एवं पश्चिमी संस्कृती को बढ़ावा मिला है।
- सहरिया समाज में सहरिया लोगों के द्वारा सोशल मीडिया का प्रमुख उपयोग में मनोरंजन, समाजीकरण एवं सूचना को पाया गया है।
- सहरिया समाज में सोशल मीडिया के नकारात्मक पहलुओं में एक प्रमुख बिन्दु यह उभर कर सामने आया कि सोशल मीडिया के माध्यम से सहरिया समाज में सामाजिक मेल मिलाप और वार्तालाप कम हुआ है।
- सोशल मीडिया के माध्यम से सरकारी योजनाओं और सुविधाओं की जानकारी सहरिया जनजाति के लिए उपलब्ध कराई जा सकती है। इससे उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने में मदद मिल सकती है। इन सभी तरीकों से सोशल मीडिया सहरिया जनजाति के सामाजिक और आर्थिक विकास में प्रभावी रूप से योगदान कर सकता है। यह उन्हें अधिक उत्साहित करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में मदद कर सकता है।

सन्दर्भ सूची:

1. दुबे, श्यामाचरण (1995) आदिवासी भारत, राजकमल प्रकाशन, देहली, पृ. 10-11
2. जैन, पुखराज (1990) भारत की सांस्कृतिक विरासत, साहित्य भवन आगरा पृ. 222-23
3. जैन, पुखराज (1990) भारत की सांस्कृतिक विरासत, पृ. 226-28
4. नायक, टी. बी. (1984) द सहरियास, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, पृ. 6
5. नायक, टी. बी. (1984) द सहरियास, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, पृ. 12
6. निरगुणे, बंसत (2016) सहरिया, म.प्र. आदिवासी लोककला परिषद्, भोपाल प्रकाशन, पृ. 10-11
7. निरगुणे, बसंत (1990) सहरिया: एक परिचय, मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला मंडल, भोपाल, पृ. 4-5
8. नायक, टी. बी. (1984) द सहरियास, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, (1984), पृ. 60-62
9. शर्मा, नीरू एवं शर्मा, आनंद कुमार (2017) सहरिया जनजाति, प्रेरणा प्रकाशन पृ. 110-130

10. शंकर, विवेक (2014) सहरिया: समाज एवं संस्कृति,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृ. 144-147
11. व्यास, उदय भानु (1994) सहरिया विकास अभिकरण एक मूल्यांकन, पृ. 191-196
12. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Census of India 2011. Retrieved from https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/42947
13. जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग, राजस्थान सरकार (2019-20) वार्षिक प्रशासनिक प्रतिवेदन। Retrieved from https://tad.rajasthan.gov.in/Content/Hindi/Administrativereporthindi.aspx?menu_id=10081
14. Econsultancy. (2009, March). What is social media? Here are 34 definitions. Retrieved from https://econsultancy.com/blog/3527-what-is-social-media-here-are-34-definitions/
15. SmallBizTrends. (2013, May). The complete history of social media [Infographic]. Retrieved from http://smallbiztrends.com/2013/05/the-complete-history-of-social-media-infographic.html
16. Business2Community. (2024, August). The impact of social media on society. Retrieved from http://www.business2community.com/social-media/impact-social-media-truly-society-0974685
17. CyberOrient. (2012, May). The role of social media in the Lok Sabha election. Retrieved from https://cyberorient.net/?s=the+role+of+social+media
18. Youth Ki Awaaz. (2014, May). The big role social media played in the Lok Sabha election. Retrieved from http://www.youthkiawaaz.com/2014/05/big-role-socialmedia-played-lok-sabha-election-brief-look/